International Journal of Advanced Research and Development

National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 654-657

सुमित्रा नंदन पंत के काव्य के विविध चरण

राघवेन्द्र प्रताप सिंह

शोधार्थी, हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

छायावादी काव्यधारा को एक नयी गति देने में सुमित्रानंदन पंत की भूमिका उल्लेखनीय रही है। भाव भाषा एवं शिल्प-एवं सभी दृष्टियों से पंत ने छायावाद को सम्पन्न बनाया है। अपने लम्बे जीवन काल (1900 से 1977 तक) के लगभग साठ वर्षो में वे निरंतर रचनाशील रह हैं। इनकी इस समूची काव्य-यात्रा को एक सीधी-सपाट रेखा द्वारा स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। अपनी इस लम्बी रचना-यात्रा में कई मंजिलों से गुजरते हुए इन्होंने विभिन्न विचारधाराओं और भावनाओं का आगमन किया है। अपने कृतित्व के लिए पंज जी को यथोचित सम्मान भी मिला है। सन् 1961 में भारत सरकार द्वारा इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया। उसी वर्ष इनकी काव्य कृति 'कला और बूढ़ा चांद' को साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। 1964 ई. में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दस हजार रूपए के विशेष पुरस्कार से अलंकृत किया गया। अपने चिदम्बरा काव्य संग्रह पर इन्हें 1969 में भारतीय ज्ञानपीठ का सर्वोच्च पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

छायावादी कवियों में सर्वाधिक काव्य रचना पंत ने ही की है। इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं, उच्छवास, वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण, किरण, स्वर्ण धूलि, ज्योत्सना, उत्तरा, रजत शिखर, शिल्पी, सौवर्ण, अतिमा, वाणी, पल्लविनी, आधुनिक कवि, कला और बूढ़ा चांद, रश्मिबंध, चिदम्बरा, समाधिता, लोकायतन, किरण वीणा, गीत हंस, पतझर : एक भाव क्रांति, गंधवीथि, सत्यकाम आदि।

विषयवस्तु की भिन्नता के बावजूद पंत के समूचे काव्य में कल्पना की स्वच्छ उड़ान, प्रकृति के प्रति लगाव और प्रकृति तथा मानव जीवन के कोमल और सरस पक्ष के प्रति आग्रह समान रूप से मिलेगा। अपने काव्य में कल्पना के महत्व को रेखांकित करते हुए पंत ने लिखा है, 'मैं कल्पना के सत्य को सबसे बड़ा सत्य मानता हूँ। मेरी कल्पना को जिन-जिन विचारधाराओं से प्रेरणा मिली है, उन सबका समीकरण करने की मैंने चेष्टा की है। मेरा विचार है कि वीणा से लेकर ग्राम्या तक अपनी सभी रचनाओं में मैंने अपनी कल्पना को ही वाणी दी है, और उसी का प्रभाव उन पर मुख्य रूप से रहा है। शेष सब विचार, भाव शैली आदि उसकी पुष्टि के लिए गौण रूप से काम करते रहे हैं। (आधुनिक कवि) पंत की यह मान्यता विचारणीय है। उच्छवास, ग्रंथि, गुंजन के साथ ही लोकायतन तक की बहुत सी रचनाओं के संदर्भ में पंत का उक्त कथन सही प्रतीत होता है, लेकिन यह बात युगवाणी, ग्राम्या आदि जैसी वैचारिक रचनाओं के संदर्भ में सही प्रतीत नहीं होती। इस पर हम आगे यथा-स्थान इसी इकाई में विचार करेंगे।

पंत के काव्य का समुचित विवेचन-विश्लेषण करने के लिए एक दूसरा महत्वपूर्ण विचारणीय तथ्य यह है कि इन्होंने अपने कई काव्य-संग्रहों में अपने काव्य का औचित्य सिद्ध करने के लिए लम्बी भूमिकाएँ लिखी हैं। इसकी आवश्यकता उन्हें क्यों महसूस हुई? पंत ही पर कई समीक्षकों का आरोप है कि वे 'पेंदी के लोटा या थाली के बैंगन' की तरह हैं, जिन्हें समय का हर झटका अपनी दिशा में लुढ़का देता है। इस आरोप की चुनौती को स्वीकार करते हुए इन्होंने 'उत्तरा' संग्रह की प्रस्तावना में लिखा है, 'लेखक की कृतियों में विचार-साम्य के बदले उसके मानसिक विकास की दिशा को अधिक महत्व देना चाहिए, क्योंकि लेखक एक सजीव अस्तित्व या चेतना है और वह भिन्न-भिन्न समय अपने युग के स्पर्शो तथा संवेदनाओं से आंदोलित होता रहता है।' पंत की परिवर्तनशीलता तथा उक्त मान्यता की सार्थकता पर आगे यथोचित स्थान पर विचार किया जाएगा।

पंत जी के समग्र कृतित्व को ध्यान में रखकर इनकी काव्य-यात्रा को विभिन्न मोड़ों या चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

1. छायावादी या स्वच्छंदतांवादी चरण
2. समाजनिष्ठ प्रगतिशील-मार्क्सवादी चरण
3. अरविंद दर्शन पर आधारित समन्वयवादी चरण

इस अपर अलग-अलग विचार कर पंत जी की काव्य-यात्रा के विभिन्न सोपानों की विशेषताओं को आप आसानी से समझ सकते हैं।

प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम और कल्पना की ऊँची उडान पंज के काव्य की प्रमुख विशेषता मानी जा सकती है। छायावाद के अन्य कवियों-प्रसाद, निराला और महादेवी से भिन्न पंत का प्रकृति-प्रेम एक ठोस वस्तुगत सच्चाई पर आधारित है। यह सच्चाई है इनका निजी प्राकृतिक परिवेश। कूर्मांचल प्रदेश, विशेष रूप से कौसानी गांव का सुरम्य प्राकृतिक वातावरण, जहां पंत पैदा हुए इनकी काव्य प्रेरणा का प्रमुख स्त्रोत रहा है। यह प्राकृतिक परिवेश किसी अन्य छायावादी कवि को नहीं मिला था। इसका उल्लेख करते हुए पंत ने लिख हैं, कवित की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति-निरीक्षण से मिली है, जिसका श्रेय

मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश को है। कवि-जीवन से पहले भी मुझे याद है, मैं घंओ एकांत में बैठा, प्राकृतिक दृश्यों को एकटक देखा करता था। प्रकृति के साहचर्य ने जहां एक ओर मुझे सौंदर्य, स्वप्न और कल्पनाजीवी बनाया, वहाँ दूसरी जनभीरू भी बना दिया। (आधुनिक कवि)

पंत का यह साहचर्यजन्य प्रकृति-प्रेम उनकी प्रथम रचना 'वीणा' से लेकर 'लोकायतन' मानक महाकाव्य तक में समान रूप से देखा जा सकता है। अपने कवि जीवन के आरंभिक दौर में पंत प्राकृतिक सौंदर्य से इतने अभिभूत थे कि नारी सौंदर्य के आकर्षक को भी उसके सम्मुख न्यून मान लिया था:

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले, तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन।

पंत के जहाँ प्रकृति निर्जीव जड़वस्तु होकर एक साकार और सजीव सत्ता के रूप में उपस्थित हुई है।

उसका एक-एक अणु, प्रत्येक उपकरण कवि-मन में जिज्ञासा उत्पन्न करता है। संध्या, प्रात: बादल, वर्षा, वसंत, नदी, निर्झर, भ्रमर, फूल, तितली, पक्षी आदि सभी उसक मन को आंदोलित करते हैं। यहाँ संध्या का एक जिज्ञासापूर्ण चित्र दर्शनीय है:

कौन, तुम रूपसि कौन?
व्योम से उत्तर रही चुपचाप
छिपी निज छाया में छवि आप
सुनहला फैला केश कलाप-
मधुर, मंथर, मृदु, मौन

इसी पूरी कविता में संध्या को एक आकर्षक युवती के रूप में मौन, मंथर गति से पृथ्वी पर पदार्पण करते हुए दिखा कर कवि ने संध्या का मानवीकरण किया है। प्रकृति का यह मानवीकरण छायावादी काव्य की एक प्रमुख विशेषता है। चाँदनी, बादल, छाया, ज्योत्सना, किरण आदि प्रकृति से संबंधित अनेक विषयों पर पंत ने स्वतंत्र रूप से कविताएँ लिखी हैं। इनमें प्रकृति के दुर्लभ मनोरम चित्र प्रस्तुत हुए हैं। पंत की बहुत सी प्रकृति संबंधी कविताओं में उनकी जिज्ञासा-भावना के साथ ही रहस्य भावना भी व्यक्त हुई है। प्रथम रश्मि', मौन निमंत्रण आदि जैसी बहुत सी कविताएँ तो मात्र जिज्ञासा भाव को ही व्यक्त करती हैं। इसके लिए प्रथम रश्मि का एक उदाहरण पर्याप्त होगा:

प्रथम रश्मि का आना रंगिणी
तूने कैसे पहिचाना?
कहाँ-कहाँ हे बाल विहंगिनी
पाया तूने यह गाना

इसी तरह मौन निमंत्रण में भी कवि की किशोरावस्था की जिज्ञासा ही प्रमुख है। लेकिन पंत की प्रकृति से सम्बद्ध ऐसी बहुत सी कविताएँ भी हैं, जिनमें इनके गहन एवं सूक्ष्म निरीक्षण के साथ ही इनकी आध्यात्मिक मान्यताएँ भी व्यक्त हुई हैं। इस दृष्टि से 'नौका विहार', एक तारा आदि कविताएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। यहाँ उदाहरण के लिए संध्या का एक चित्र है:

गंगा के चल जल में निर्मल, कुम्हला किरणों का रक्तोत्पल,
है मूँद चुका अपने मृदु दल
लहरों पर स्वर्ण रेख सुंदर पड़ गयी नील, ज्यों अधरों पर
अरूणाई प्रखर शिशिर से डर

यहां गंगा के चंचल जल में रक्तोतल (लाल कमल) के समान सूर्य के बिम्ब का डूबना और गंगा की लहरों पर संध्या की सुनहली आभा का धीरे-धीरे नीलिमा में परिवर्तित होना आदि कवि के सूक्ष्म प्रकृति निरीक्षण और उसकी गहन रंग-चेतना का परिचायक है। लेकिन कविता के अंत में कवि ने एक तारे के बाद बहुत से तारों के उदय को वह आत्म और यह जग दर्शन कहकर एकोडहं बहुस्यामि की दार्शनिक मान्यता को भी प्रतिपादित कर दिया है। इसी तरह 'नौका विहार' में भी कवि ने ग्रीष्मकालीन गंगा का एक तापस बाला के रूप में भावभीना चित्रण करते हुए अंत में जगत की शाश्वतता का स्पष्ट संकेत किया है।

प्राकृतिक सौंदर्य की भांति ही कविवर पंत की दृष्टि नारी-सौंदर्य की ओर भी आकृष्ट हुई है। पल्लविनी में संगृहीत 'ग्रंथि' 'आयू' और और 'नारी रूप' शीर्षक कविताएं पंत के प्रेम और उनकी नारी विषयक मान्यताओं के ज्वलंत दस्तावेज है। अपनी आंसू शीर्षक कवितामें इन्होंने लिख है:

वियोगी होगा पहिला कवि, आह से उपजा होगा गान
उमड़कर आँखो से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान

इस कवित में कवि ने प्रकृति के अनन्त विस्तार में अपनी प्रेमजनित व्यथा को ही चित्रित किया है। वायु बादल, आकाश, इन्द्र धुन आदि प्रकृति के तमाम उपकरण इनकी विरह वेदना को उद्दीप्त करते हैं। इस वरदान स्वरूप व्यथा में कल्पना की ऊँची उड़ान के कारण लौकिक प्रेम की यथार्थ भूमि का परित्याग कर पंत की दिव्यता का आदर्श ही अधिक प्रस्तुत हुआ है। छायावादी कवियों में प्रसाद और महादेवी का प्रेम-दर्शन भी ऐसा रही रहा है। इस कविता में पंत ने महादेवी के स्वर में मिलाकर लिख है-

विरह है अथवा यह वरदान
कल्पना में है कसकती वेदना
अश्रु में जीता सिसकता गान है

शून्य आहों में सुरीले छंद है
मधुर लय का क्या कहीं अवसान है

पंत की छायावदी युग की इन कविताओं में प्रणय वेदना के अनेकश ऐसे चित्र मिलेंगे, जिनमें शारीरिक सम्पर्क या मांसलता की अपेक्षा सूक्ष्मता और दिव्यता के दर्शन होते हैं। अपनी 'नारी रूप' शीर्षक कविता में पंत ने नारी सौंदर्य और उसके गुणों का गान करते हुए अंत में उसे 'देवि! माँ! सहचरि/प्राण!' की संज्ञा से संबोधित किया है। 'स्वर्ण किरण' (1947) तक आते-आते इनका प्रेम पूर्णत: अशरीरी और अलौकिक रूप ग्रहण कर लेता है:

देह नहीं परिधि प्रणय की,
प्रणय दिव्य है मुक्ति हृदय की।

लेकिन अपनी यौवनावस्था के प्रथम चरण में रचित पंत की बहुत सी कविताएं इनकी निजी प्रेमानुभूति पर आधारित है। इस विषय में डॉ. नगेन्द्र का यह कथन सही प्रतीत होता है कि 'हाँ, इतना अवश्य प्रतीत होता है कि उनकी 'उच्छवास', 'आँसू' और ग्रंथि' शीर्षक कविताएं किसी विशेष प्रेरणा-भार से दब कर लिखी हुई हैं और इनमें आत्मजीवन संबंधी कुछ स्पर्श अवश्य हैं। वस्तुत: ये तीनों कविताएँ प्रसाद के 'आंसू' की भाँति प्रणय-काव्य हैं, जिनमें संयोग की काल्पनिक स्मृतियाँ विरह-व्यथा के रूप में अत्यंत विह्वल भाव से अभिव्यक्त हुई है। सब मिलाकर पंत की प्रणय-भावना और नारी विषयक दृष्टि अन्य छायावादी कवियों की तरह सूक्ष्म और मानसिक अधिक है, जिसमें स्थूल शारीरिक आकर्षक का सर्वथा अभाव है।
'गुंजन' (1932) में पंत 'सुंदर है विहग, सुमन सुंदर/मानव तुम सबसे सुंदर लिखकर छायावाद के कल्पना लोक से मुक्ति का आभास दे चुके थे। लेकिन 'युगांत' (1936) में इन्होंने बाकायदे अपने छायावादी चरण के अंत में घोषणा की है। इस घोषणा का विस्तृत दस्तावेज इनके द्वारा संपादित 'रूपाभ' पत्रिका का पहला अंक (1938) है। इसमें छायावाद के स्थान पर प्रगतिवाद की अनिवार्यता को रेखांकित करते हुए पंत ने लिखा है, 'कविता के स्वप्न-भवन को छोड़कर हम इस खुरदरें पथ पर क्यों उतर जाए इस संबंध में दो शब्द लिखना आवश्यक हो जाता है। इस युग में जीवन वास्तविकता ने मूल हिल गए हैं। अतएव इस युग की कविता स्वप्नों में नहीं पल सकती है। उसकी जड़ों को अपनी पोषण-सामग्री ग्रहण करने के लिए कठोर धरती का आश्रय लेना पड़ रहा है। यदि हमें सत्य के प्रति वास्तविक उत्साह है तो हम अपने महान उत्तरदायित्व की अवहेलना नहीं कर सकते है। हमारा निश्चित ध्येय प्रगति की शक्तियों को सक्रिय योग देना होगा। (रूपाभ, प्रथम अंक, पृष्ठ 63-64) इस कथन से स्पष्ट है कि पंत एक कवि के रूप में अपने सामाजिक उारदायित्व के निर्वाह की भावना से प्रेरित होकर प्रगतिवादी साहित्यांदोलन से जुड़े ।
इस प्रकार की कविताओं में पंत अपनी छायावादी रचना-दृष्टि से विदा होने की सूचना मात्र न देकर दत चित नये स्वागत के लिए तमाम सारे उपकरणों को एकत्र करने में भी दत्तचित्र हुए है। युगांत मं इनकी वैयक्तिकता सामाजिकता में परिवर्तित हो गयी है। 'युगवाणी में इनका नवयुग साम्यवादी युग में रूपांतरिता होता दिखाई देता है। युगवाणी की कविताओं में पत ने मार्क्स के ऐतिहासिक और द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के सैद्धांतिक और व्यावहारिक महत्व का प्रतिपादन भी किया है। इनके अनुसार मार्क्स ने अपने वैज्ञानिक-सामाजिक विश्लेषण से पहली बार इस सच्चाई को उजागर किया है कि मानव-सभ्यता का इतिहास केवल कुछ शूरवीरों की कहानी, राजाओं की विजय लालसा या सुंदरियों का भृकुटि विलास न होकर साधारण जनता के कठोर श्रम का फल है।

साक्षी है इतिहास, किया तुमने दुंदुभि से घोषित
प्रकृति विजित कर, मानव ने की विश्व सभ्यता स्थापित।
धन्य मार्क्स! चिर तमच्छन्न पृथ्वी के उदय शिखर पर
तुम त्रिनेत्र के ज्ञान चक्षु से प्रकट हुए प्रलयंकर!

समाज और सामाजिक जीवन से कटकर केवल कल्पना के आधार पर साहित्य की रचना करना अंतत: कलाकार की कमजोरी सिद्ध करता है। अपनी इस कमजोरी के कारण ही पंत 'युगवाणी' और 'ग्राम्या' जैसी रचनाओं के बावजूद 'स्वर्ण-किरण', 'स्वर्णधूलि' से लेकर 'लोकायतन' तक की यात्रा करते हैं। इनकी इस प्रकृति पर आक्षेप करते हुए नागार्जुन ने लिखा हैं-

इतर साधारण जनों से अलहदा होकर रहो मत
कलाधर या रचयिता होना नहीं पर्याप्त है
विजयिनी जनवाहिनी का पक्षधर होना पड़ेगा
अगर तुम निर्माण करना चाहते हो
शीर्ण संस्कृति को अगल सप्राय करना चाहते हो
अन्यथा शिमला कि नैनीताल में
ललित 'लोकायतन' रचोगे।

देश की स्वाधीनता के बाद पंत की परिवर्तित रचनादृष्टि को दृष्टिहीन दार्शनिकता के नाम पर प्रगतिवादी खेमें से आलोचना का विषय बनाया गया। देश के अत्यंत विषम ओर कोलाहलमय वातावरण में पंत की समन्वयवादी दृष्टि को व्यवस्था का पोषक माना गया। इस पर आक्षेप करते हुए केदारनाथ अग्रवाल ने 'कांग्रेस के राज में' शीर्षक कविता में लिखा है:

कांग्रेस के राज में, आयो नहीं बसंत।
अपत कटीली डार के के गावत हैं गुन पंत।

भारतीय स्वाधीनता प्राप्ति से चार-छह वर्ष पूर्व से लेकर चार-छह वर्ष बाद तक पंत आलोचना प्रत्यालोचना के दायरे में है। इनके काव्य से

संबधित अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार की आलोचना पूरे वेग से प्रवाहित हुई है। लेकिन पंत इनमें से प्रायः अछूते रहकर अपने रचनाकर्म में निरत रहे।

अपने छायावादी चरण में पंत ने छायावाद की अंतर्बाह्य विशेषताओं को अत्यंत कुशलता के साथ अपने काव्य में समावेश किया है। छायावाद की वैयक्तिक स्वाधीनता की चेतना की अभिव्यक्ति का प्रयास प्रकृति और कल्पना के माध्यम से पंत ने सफलतापूर्वक किया है। प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही इनकी नारी और प्रणय विषयक भी छायावादी काव्यधारा की पूर्ण संगति में है।

यहां इस बात की ओर संकेत मात्र कर देना अपक्षित है कि सामाजिक ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से आदर्शवाद और भौतिवाद-दोनों परस्पर भिन्न और विरोधी दृष्टिकोण हैं। आदर्शवाद के अनुसार पहले आदर्श (आइडिया) फिर भौतिक जगक की स्थिति है। जबकि भौतिकवाद के अनुसार पहले भूत (पदार्थ) फिर विचार या चेतना का अस्तित्व होता है। इसके लिए सामान्य उदाहरण लिया जा सकता है जैसे, आदर्शवदी मानते हैं कि पहले हमारे मस्तिष्क में एक मकान का विचार या कल्पना अस्तित्व ग्रहण करती है, फिर उसे हम भौतिक आकार देते हैं। जबकि भौतिकवादियों के अनुसार जब तक बाह्य जगत में पेड़, पत्थर, मिट्टी आदि मकान के उपकरणों का अस्तित्व नहीं होगा तब तक मकान की कल्पना या विचार हमारे मस्तिष्क में आ ही नहीं सकता। इनके अनुसार मनुष्य, विचार या चेतना के अस्तित्व में आने से पहले ही भौतिक जगत का अस्तित्व था। मनुष्य जीवन और उसकी चेतना का विकास इस भौतिक जगत के विकास पर आधारित है। पदार्थ (मैटर) का मनुष्य और उसकी चेतना से स्वतंत्र अस्तित्व पहले से था, अतः भौतिक जगत के आधार पर ही चेतना का विकास हुआ है। लेकिन आध्यात्मवादी आदर्शवादी चिंतकों को एक समुदाय चेतना को ईश्वर प्रदत्त देवी शक्ति मानकर, उसे प्राथमिक स्थान देता है। यदि आप विकास की इस दृष्टि को स्वीकार करते है, तो चेतना या परम चैतन्य के आधार पर पंत की समन्वय भावना आपके लिए स्वीकार्य हो सकती है। इस दृष्टि से बहुत सारे आलोचकों ने पंत के काव्य की प्रशंसा भी की है। लेकिन इसके विपरीत यदि आप ऐतिहासिक विकास की भौतिकवादी दृष्टि को स्वीकार करते हैं, तो पंत की आध्यात्मिकता और भौतिकता के समन्वय में कुछ असंगतियाँ दिखायी दे सकती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक कवि
2. गुंजन, 1932
3. युगांत, 1936
4. रूपाभ प्रथम अंक, 1938
5. स्वर्ण किरण, 1947
6. 'कला और बूढ़ा चाँद', 1959